मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

सितंबर 2025 तबूक 1404 हि.श	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण-23 अंक -09

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज़ | **एज़ाज़ी सम्पादक :** एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मैनेजर
अज़ीज़ अहमद नासिर
9682536974

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190

Email:
ansarullah@qadian.in

WEB LINK
https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

क्रमांक	विषय सूची	पृष्ठ
1	सम्पादकीय :- "गर यह मिले तो जानूं कि सब कुछ मिला मुझे"	2
2	दर्सुल क़ुरआन:- याद रखो! तुम्हारा नाम अंसारुल्लाह है!	3
3	दर्सुल हदीस :- प्यारे नबी ﷺ के प्यारे अंसार	5
4	मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम "मन अन्सारी इलल्लाह" का वास्तविक अर्थ	7
5	हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात "आपकी हर हरकत और सुकून खलीफ़ा-ए-वक़्त के अधीन होना चाहिए!"	9

संपादकीय

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم و علی عبدہ المسیح الموعود
ھو الناصر خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

"गर यह मिले तो जानूं कि सब कुछ मिला मुझे"

> نَحنُ اَنصارُ اللہ
> हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं
> जब हमने अपने" आपको अंसारुल्लाह कहा है और 'नहनु अंसारुल्लाह' (हम अल्लाह के मददगार हैं) का नारा लगाया है, तो हमें फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में होने का हक़ और अंसारुल्लाह होने का हक़ अदा करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए।
> ख़ुत्बा: सालाना इज्तिमा, मजलिस अंसारुल्लाह ब्रिटेन, 2024

हमारे प्यारे आक़ा व सरदार, नबी-ए-अकरम ﷺ अपने अंसार सहाबा की आज्ञाकारिता, फ़रमाबरदारी, ख़िदमत व क़ुर्बानी और सबसे बढ़कर उनके इबादत और तक़वा (सादगी और परहेज़गारी) से इतने ख़ुश थे कि आपने ﷺ एक बार फ़रमाया: آیَۃُ الْاِیْمَانِ حُبُّ الْاَنْصَار अर्थात् अंसार से मोहब्बत ईमान की निशानी है। एक और मौक़े पर आपने ﷺ फ़रमाया: "जो अंसार से मोहब्बत करेगा, अल्लाह उससे मोहब्बत करेगा और जो उनसे दुश्मनी रखेगा, अल्लाह उससे दुश्मनी रखेगा।" (बुख़ारी) ये वही ख़ुशनसीब लोग हैं जिनसे मोहब्बत जन्नत का ज़रिया और जिनसे दुश्मनी अल्लाह की नाराज़गी का कारण है। इन सहाबा की असंख्य विशेषताएं सब पर ज़ाहिर हैं, यहाँ तक कि उनके गुणों और महानताओं को दुश्मनों ने भी स्वीकार किया।

क़ुरैश-ए-मक्का के एक सरदार, उरवा बिन मसऊद ने हज़रत मुहम्मद ﷺ की मुबारक महफ़िल का हाल यूँ बयान किया:

"मुसलमानों की मोहब्बत, आस्था और वफ़ादारी का हाल यह है कि... मैंने क़ैसर, किस्रा और नजाशी के दरबार देखे हैं, मगर ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद ﷺ के सहाबा जैसी इज़्ज़त और वफ़ादारी मैंने किसी बादशाह के दरबार में नहीं देखी।" (बुख़ारी) अत:! ये थे रसूल-ए-मक़बूल ﷺ के अंसार वो आशिक़-ए-रसूल जिनको नबी-ए-अकरम ﷺ ने हिदायत के सितारे की उपाधि दी है और जिनसे मोहब्बत को ईमान का हिस्सा ठहराया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आने का सार यूँ बयान किया: "सहाबा से मिला, जब मुझको पाया।" "और आपको यह इल्हाम हुआ कि: اَنْتَ الشَّیْخُ الْمَسِیْحُ وَ اِنِّیْ مَعَکَ وَ مَعَ اَنْصَارِکَ और आपको यह ख़ुदाई इल्हाम हुआ कि तुम मसीह हो और मैं तुम्हारे साथ तथा तुम्हारे सहयोगियों के साथ हूँ। (तज़किरा) आज ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के मौजूदा दौर में हमारे प्यारे ख़लीफ़ा मज्लिस अंसारुल्लाह के हर सदस्य से यही आशा रखते हैं कि वे रसूलुल्लाह ﷺ के अंसार की जीवनी को अपनाएँ। यह एक सुनहरा मौक़ा है, जैसे ख़ून लगा कर शहीदों में शामिल होने का अनमोल माध्यम दिया गया हो। इसलिए, मज्लिस अंसारुल्लाह के 85वें साल के मौक़े पर हम अल्लाह के हुज़ूर शुक्राने के तौर पर एक पक्का अहद करें कि हम वास्तविक रूप से अंसार-ए-रसूल ﷺ बन कर दिखाएँगे। आइए! रसूल-ए-मक़बूल ﷺ की इस बेमिसाल मोहब्बत से अपना हिस्सा पाएँ!! अल्लाह हमें इसकी तौफ़ीक़ अता करे।

"गर यह मिले तो जानूं कि सब कुछ मिला मुझे" (कलाम-ए-महमूद)

(एच. शमसुद्दीन)

दर्सुल क़ुरआन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी[रज़ि]

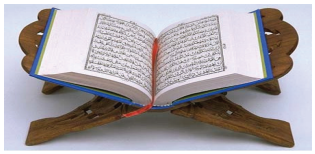

याद रखो!
तुम्हारा नाम अंसारुल्लाह है!!

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ۔

(अस-सफ़: 15)

"ऐ ईमान वालो! ख़ुदा (के दीन) के मददगार बन जाओ, जिस तरह मरियम के बेटे ईसा ने अपने हवारियों से कहा कि ख़ुदा के (करीब ले जाने वाले) कामों में मेरा कौन मददगार है। तो उन्होंने कहा हम ख़ुदा (के दीन) के मददगार हैं।"

आप लोगों का नाम अंसारुल्लाह रखा गया है। यह नाम क़ुरआन की तारीख़ में भी दो बार आया है और अहमदियत की तारीख़ में भी दो बार।

क़ुरआनी तारीख़ में एक बार तो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के हवारियों के संबंध में यह शब्द आते हैं कि जब आपने कहा: مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ (ख़ुदा की तरफ़ मेरा कौन मददगार है) तो हवारियों ने कहा: نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ यानी "हम ख़ुदा के अंसार हैं।"

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा के बारे में फ़रमाया कि उनमें से एक गिरोह मुहाजिरीन (प्रवासियों) का था और एक गिरोह अंसार का था। गोया यह नाम क़ुरआनी तारीख़ में दो बार आया एक दफ़ा ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों के बारे में और दूसरी दफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में।

जमाअत अहमदिया की तारीख़ में भी अंसारुल्लाह का दो जगह वर्णन आता है। एक दफ़ा जब हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के पैग़ामियों ने मुख़ालिफ़त की तो मैंने अंसारुल्लाह की एक जमाअत क़ायम की। और दूसरी दफ़ा जब जमाअत के बच्चों, नौजवानों, बूढ़ों और औरतों की तन्ज़ीम बनाई गई तो चालीस साल से ऊपर के मर्दों की जमाअत का नाम अंसारुल्लाह रखा गया। इस तरह जिस तरह क़ुरआन करीम में दो गिरोहों का नाम अंसारुल्लाह आया है, उसी तरह जमाअत अहमदिया में भी दो ज़मानों में दो जमाअतों का नाम अंसारुल्लाह रखा गया। पहली दफ़ा जिनका नाम अंसारुल्लाह रखा गया, उनमें से अक़्सर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के सहाबा थे, क्योंकि यह जमाअत 1913–1914 में बनाई गई थी और उस वक़्त अक़्सर सहाबा ज़िन्दा थे और इसी जमाअत में शामिल थे। इसी तरह क़ुरआन करीम में

भी जिन अंसार का ज़िक्र है उनमें ज़्यादा तर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा शामिल थे।

दूसरी दफ़ा जमाअत अहमदिया में आप लोगों का नाम उसी तरह अंसारुल्लाह रखा गया है, जिस तरह क़ुरआन करीम में हज़रत ईसा नासरी (अलैहिस्सलाम) के साथियों को अंसारुल्लाह कहा गया है। यानी जिस तरह हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) के साथियों को अंसारुल्लाह कहा गया था, उसी तरह मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के साथियों को भी अंसारुल्लाह कहा गया। गोया क़ुरआनी तारीख़ में भी दो ज़मानों में दो गिरोहों का नाम अंसारुल्लाह रखा गया और जमाअत अहमदिया की तारीख़ में भी। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की मिसाल आप लोगों में पाई जाती है। जिस तरह उनके हवारियों को अंसारुल्लाह कहा गया था उसी तरह मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के साथियों को अंसारुल्लाह कहा गया है। फिर आप में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने के अंसार की मिसाल भी पाई जाती है। यानी जिस तरह अंसारुल्लाह में वही लोग शामिल थे जो सहाबा थे, उसी तरह आप में भी हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के सहाबा शामिल हैं। गोया आप लोगों में दोनों मिसालें पाई जाती हैं। हमें ईसाइयों की सिर्फ़ बुराइयाँ ही नहीं देखनी चाहिए बल्कि उनकी खूबियाँ भी देखनी चाहिए। जहाँ यह बुराइयाँ नज़र आती हैं कि उनमें से एक ने तीस रुपये लेकर हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) को बेच दिया, वहीं यह खूबी भी पाई जाती है कि आज तक, जबकि हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) पर लगभग दो हज़ार साल गुज़र चुके हैं, वह उनकी ख़िलाफ़त को क़ायम रखे हुए हैं। दरअसल यह बात उनके हवारियों के वादे का नतीजा है। जब हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) ने कहा: مَنۡ اَنۡصَارِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (ख़ुदा के रास्ते में मेरा कौन मददगार है?) तो हवारियों ने जवाब दिया: نَحۡنُ اَنۡصَارُ اللّٰہِ (हम ख़ुदा के रास्ते में आपकी मदद करेंगे)। उन्होंने अपने आप को ख़ुदा की ओर संबद्ध किया, और ख़ुदा हमेशा बाक़ी रहने वाला है। इसका मतलब यह हुआ कि "हम वे अंसार हैं जिन्हें ख़ुदा की ओर संबद्ध किया गया है।"इसलिए जब तक हम ज़िन्दा है हम भी उसकी मदद करते रहेंगे। देख लो, हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) की वफ़ात पर लगभग दो हज़ार साल गुज़र गए हैं, लेकिन ईसाई लोग बराबर ईसाईयत की तब्लीग़ करते चले आ रहे हैं और अब तक उनमें ख़िलाफ़त चल रही है।

याद रखो! तुम्हारा नाम अंसारुल्लाह है, अर्थात ख़ुदा के मददगार। तुम्हें ख़ुदा के नाम की तरफ़ संबद्ध किया गया है और ख़ुदा अनादि और अनन्त है। इसलिए तुम्हें भी प्रयास करना चाहिए कि तुम अबदियत के प्रतीक बनो। तुम्हें अपने अंसार होने की निशानी अर्थात् ख़िलाफ़त को हमेशा के लिए स्थिर रखना चाहिए और यह कोशिश करनी चाहिए कि यह कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहे। इसके दो साधन हो सकते हैं: पहला यह कि अपनी संतान की सही परवरिश की जाए और उनमें ख़िलाफ़त की मोहब्बत स्थापित की जाए।"

(ख़िताब फ़रमूदा: 26 अक्तूबर 1956 / अनवारुल उलूम, जिल्द 25)

★ ★ ★

दर्सुल हदीस

प्यारे नबी ﷺ के प्यारे अंसार

आंहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

آيَةُ الْإِيمَانِ حُبُّ الْأَنْصَارِ

"अंसार से मोहब्बत रखना ईमान की निशानी है।"

(बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार)

हज़रत सैयद ज़ैनुलआबिदीन वलीउल्लाह शाह (रह.)

अंसार की विशेषताएँ: अंसार नाम है मदीना के क़बीलों औस और ख़ज़रज और उनके हलीफ़ों का। उन्होंने हज़रत मुहम्मद ﷺ और दूसरे मुहाजिरीन की कठिन वक़्त में मदद की और उन्हें अपने घरों में पनाह दी। ख़ुद भूखे रहे लेकिन मुहाजिरीन के खाने-पीने और ठहरने का इंतज़ाम किया। यह नाम ख़ुद अल्लाह तआला ने उन्हें दिया है। (देखिए सूरह तौबा: 117, 100) इस्लाम के इतिहास में यह नाम बहुत सम्मान योग्य है। इस विषय के शीर्षक में जिस आयत का हवाला और तर्जुमा दिया गया है उसमें भी अंसार ही का ज़िक्र है। (देखिए सूरह हश्र: 12) और उस आयत में अंसार की तारीफ़ की गई है।

अंसार के युग का महत्त्व: इस विषय के अंतर्गत अंसार के मशहूर ख़ानदानों का ज़िक्र है जो खूबियों में दूसरे घरानों से श्रेष्ठ थे। और यह श्रेष्टता उन्हें इस वजह से मिली कि उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और उसकी राह में उच्च श्रेणी की क़ुर्बानियाँ प्रस्तुत कीं। आंहुज़ूर ﷺ को हुक्म हुआ था: قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (अल-अनआम: 163)"(ए नबी) कह दीजिए! मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब कुछ अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब है।"

आप ﷺ ने इस हुक्म की पालना में दो प्रकार की इबादतों के आदर्श सहाबा के सामने प्रस्तुत किए: **सलात (नमाज़)** – यह वह इबादत है जो निर्धारित नियमों के साथ अदा की जाती है। इसमें अल्लाह के हुक्म की पालना का इकरार रुकू व सज्दा के साथ दिन और रात के निर्धारित समयों में और इनके अलावा भी दुसरे समय में किया जाता है। यह इबादत सेवाभाव और ख़ादिमाना रूप रखती है जिसमें पूरा अदब, सफ़ाई, पवित्रता, वस्त्र और पर्दा, खड़े रहनेनक व और बैठने आदि का ख़्याल रखा जाता है। आंहुज़ूर ﷺ ने इस इबादत का उच्च श्रेणी का उदाहरण दिखाया।

नुसुक़ या नसिक़ (क़ुर्बानी) – इसके मानी हैं क़ुर्बानी, जो इब्राहीमी क़ुर्बानी के आदर्शों पर है। इसमें बाप, बेटे और बीवी की क़ुर्बानी शामिल है। यह इबादत आशिक़ाना रूप रखती है।

इसमें माबूद-ए-हक़ीक़ी (अर्थात ख़ुदा) की राह में वतन, माल-ओ-जान, सगे संबंधी और हर प्रिय वस्तु की क़ुर्बानी करनी पड़ती है। यही इस्लाम का अस्ल मक़सद है। एक मुसलमान अपने आप को पूरी तरह अल्लाह तआला के हवाले कर देता है और उसकी मोहब्बत में खो जाता है। उपरोक्त आयात में इन दोनों इबादतों को مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا के नाम से पुकारा गया है और इसका नाम सिरात-ए-मुस्तक़ीम रखा गया है। अत: आप से फ़रमाया गया:

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيمًا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (अल-अनआम: 162) "कह दीजिए! मुझे मेरे रब ने सीधी राह की हिदायत दी है, ऐसे दीन की जो क़ायम है इब्राहीम के दीन की जो सच्चाई पर क़ायम था और वह मुश्रिकों में से नहीं था।" आंहुज़ूर ने सहाबा के सामने इन दोनों इबादतों का पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया। और इसके नतीजे में उनकी ज़िन्दगी में वह इनक़लाब आया जिसके बयान में अबवाब-ए-मनाक़िब क़ायम किए गए हैं। पहले मुहाजिरीन के मनाक़िब का ज़िक्र हुआ और अब अंसार का। दोनों का ज़िक्र सूरह अनफ़ाल (आयत 73–76) में किया गया है। इस ज़िक्र में मुहाजिरीन और अंसार के बारे में وَالَّذِينَ آوَوا وَنَصَرُوا कहा गया है। इसमें जिस बात को उभार कर दिखाया गया है वह है जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह, जो माल व जान और दूसरी महबूब चीज़ों की क़ुर्बानी का तलबगार है। हज के सिद्धांतों और ज़ाहिरी क़ुर्बानी से अस्ल मक़सद जानवरों का ख़ून बहाना और उनका गोश्त नहीं है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया: لَن يَنَالَ اللهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَكِن يَنَالُهُ التَّقْوَى مِنكُمْ (अल-हज: 38) "अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका ख़ून, बल्कि तुम्हारा तक़वा है जो अल्लाह तक पहुँचता है।" तक़वा का संबंध व्यक्ति के आत्म-शुद्धिकरण और समाज की सामूहिक रक्षा व भलाई से है, जिसके लिए संघर्ष (जिहाद) का आदेश दिया गया है। इसी कारण इन आयतों के बाद ख़ुदा ईमान वालों से मदद का वादा करता है और कहता है:"أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ (अल-हज: 40)"जिन्हें नाहक़ सताया गया, उनके लिए लड़ने की इजाज़त दी गई, और निस्संदेह अल्लाह उनकी मदद करने पर पूरी तरह सामर्थ्यवान है।"यह मदद और नुसरत का वादा मज़लूम मुहाजिरीन के हक़ में अंसार-ए-मदीना के ज़रिए साफ़ तौर पर पूरा हुआ। उन्होंने उनकी सहायता के लिए तलवार उठाई और जब तक नुसरत (सहायता) का हक़ अदा न कर लिया, तब तक तलवार को म्यान में नहीं डाला।

इस क़ुर्बानी के अमल में उन्होंने अपने सरदार, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने उबूदियत (बंदगी और आज्ञाकारिता) का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया। और इसी कारण वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और तमाम मोमिनों के बेहद अज़ीज़ और प्यारे बने।

(शरह बुख़ारी, जिल्द 7, सफ़ा 260, 270–271)

★ ★ ★

मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

"मन अन्सारी इलल्लाह" का वास्तविक अर्थ

असल बात यही है कि सच्चा सहायक और मददगार वही पाक ज़ात है, जिसकी महिमा है: "نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ" ख़ुदा तआला इस बात पर क़ादिर था और है कि अगर वह चाहे तो अपने रसूलों को किसी भी प्रकार की सहायता की ज़रूरत बाक़ी न रहने दे। लेकिन फिर भी एक समय ऐसा आता है कि वे मजबूर होकर कहते हैं:

"مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَی اللّٰهِ " (अस-सफ़:15) क्या वे यह पुकार किसी भूखे फ़क़ीर की तरह लगाते हैं? नहीं! "मन अन्सारी इलल्लाह" कहने की भी एक गरिमा होती है। वे दुनिया को यह सिखाना चाहते हैं कि कारणों और साधनों की परवाह करनी चाहिए। वे जानते हैं कि ख़ुदा तआला का यह वादा:"اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا " (अल-मुमिन:52) एक पक्का और निश्चित वादा है। मैं कहता हूँ, अगर ख़ुदा किसी के दिल में मदद का ख़याल ही न डाले, तो भला कौन मदद कर सकता है?

असल बात यही है कि सच्चा मददगार और सहायक वही पाक ज़ात है, जिसकी महिमा है: "اَلْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ" दुनिया और दुनिया की सहायता उन लोगों की नज़रों में ऐसे होती हैं जैसे कोई मुर्दा। उनकी हैसियत एक मरे हुए कीड़े से भी कम होती है।

असल में वे अपने काम का मालिक सिर्फ़ ख़ुदा को ही मानते हैं, और यह बात बिल्कुल सच्ची है: "وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ " (अल-आराफ़:197) ख़ुदा तआला उन्हें हुक्म देता है कि वे अपने काम को दूसरों के ज़रिये व्यक्त करें।

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विभिन्न मौक़ों पर मदद की तालीम देते थे, क्योंकि वह अल्लाह की मदद का वक़्त था। वे तलाश करते थे कि यह नुसरत (मदद) किस पर उतरती है। यह बहुत ग़ौर तलब बात है।

असल में ख़ुदा का भेजा हुआ शख़्स लोगों से मदद नहीं माँगता, बल्कि "मन अन्सारी इलल्लाह" कहकर वह उस मदद का इस्तक़बाल करता है और उसे पाने के लिए एक बेचैन दिल की तरह तलाश करता है।

नादान और छोटी सोच वाले लोग यह समझते हैं कि वह लोगों से मदद माँगता है। लेकिन हक़ीक़त में उस महिमा में, किसी दिल के लिए जो उस नुसरत का सबब बनता है, एक बरकत और रहमत पैदा हो जाती है।

इसलिए ख़ुदा का भेजा हुआ जब मदद माँगता है, तो उसका असली रहस्य और राज़ यही है, और यह क़यामत तक इसी तरह रहेगा।

दीन के प्रचार और प्रसार में ख़ुदा का भेजा हुआ दूसरों से मदद चाहता है। लेकिन क्यों? अपने फ़र्ज़ की अदायगी के लिए, ताकि दिलों में ख़ुदा की महानता पैदा हो। वरना यह तो ऐसी बात है कि लगभग कुफ़्र तक पहुँच जाती है, अगर ग़ैर-ख़ुदा को मालिक ठहराया जाए और इन पवित्र आत्माओं से ऐसा होना बिल्कुल असंभव है।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 107-108)

SONET
SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

"आपकी हर हरकत और सुकून खलीफ़ा-ए-वक़्त के अधीन होना चाहिए!"

{ अंसारुल्लाह के लिए चार बुनियादी हिदायतें }

1. नमाज़ की पाबंदी

2. क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत और हदीस व हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) की किताबों का अध्ययन

3. दीन की खातिर माली क़ुर्बानी (धन का त्याग)

4. ख़िलाफ़त से वफ़ादारी और उससे मज़बूत रिश्ता

अंसारुल्लाह की तंज़ीम ऐसी है जिसके सदस्य उस उम्र तक पहुँच जाते हैं जब इंसान को अपनी ज़िंदगी के अंजाम के लक्षण नज़र आने लगते हैं और तेज़ी से उस अंजाम की तरफ़ क़दम बढ़ने लगते हैं। यही एहसास उसे मजबूर करता है कि वह सच्चे दिल से ख़ुदा के आगे झुके और उसका क़ुर्ब (निकटता) तलाश करे। इसका सबसे अहम ज़रिया नमाज़ है, जिसे सारी इबादतों में ख़ास अहमियत हासिल है। हज़रत रसूल-ए-अकरम (स.अ.व.) ने नमाज़ को इबादत का सार (मक़सद/मूल) क़रार दिया है। इसमें तमाम दुआएँ शामिल हैं। अगर कलिमा तय्यिबा मुसलमान होने का ज़बानी इक़रार है तो नमाज़ उसकी अमली (व्यवहारिक) तस्वीर है। इसलिए मेरी पहली नसीहत यह है कि नमाज़ों में बाक़ायदा पाबंदी करें और अपनी आने वाली नस्लों के लिए नेक नमूना पेश करें।

दूसरी बात, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) की किताबों का मुताला (अध्ययन) है। हर बार पढ़ने से नए-नए मानी (अर्थ)

सामने आते हैं। यह मुताला जहाँ आपको मारिफ़त (ज्ञान और समझ) में बढ़ाएगा, वहीं आपके बच्चों के लिए भी नेक नमूना बनेगा और यह ज्ञान "दावत-ए-इलल्लाह" (लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाने) के मैदान में भी आपके लिए मददगार साबित होगा।

तीसरी बात, दीन की खातिर माली क़ुर्बानी है। मैंने अंसार को "निज़ाम-ए-वसीयत" में शामिल होने की तरफ़ तवज्जुह दिलाई थी। हर मजलिस (शाखा) के स्तर पर इसकी कोशिश होनी चाहिए। इस निज़ाम में शामिल होने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) ने भी दुआएँ की हैं। इसी तरह दूसरी माली तहरीक़ात (आर्थिक योजनाएँ) भी हैं, उनमें भी हिस्सा लें और इस प्रकार से अपना जायज़ा लें कि क्या हम अंसारुल्लाह होने का हक़ अदा कर रहे हैं?

अंसारुल्लाह का एक और बहुत अहम काम है: ख़िलाफ़त से वफ़ादारी और उसके इस्तिहकाम (मज़बूती) की कोशिश।

जमाअत और ख़िलाफ़त एक ही जिस्म की तरह हैं। जमाअत के अफ़राद उसके अंग हैं और खलीफ़ा दिल व दिमाग़ की तरह हैं। क्या यह मुमकिन है कि इंसान का दिमाग़ हाथ को कोई हुक्म दे और हाथ उसे ठुकराकर अपनी मरज़ी से काम करे?

अगर आप इस ताल्लुक़ (रिश्ते) को समझ लें और हर शख़्स में यह सोच पैदा हो जाए तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि कोई फ़र्द-ए-जमाअत अपने फ़ैसलों, अपनी राय और अपने अमल पर अड़ जाए।

इसलिए, आपकी हर हरकत और हर कार्य खलीफ़ा-ए-वक़्त के अधीन होना चाहिए। (माहनामा अंसारुल्लाह, रब्वा / अक्टूबर 2010, सफ़ा 8-9)

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत 2025

मज्लिस अंसारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा क़ादियान दारुल-अमान में दिनांक **24, 25, 26 अक्तूबर 2025** जुम्मा, सनीचर और इतवार को आयोजित होगा इंशाअल्लाह।

इस मुबारक इज्तिमा में शिरकत के लिए अभी से दुआओं के साथ तैयारियाँ शुरू कर दें। अल्लाह तआला हर लिहाज़ से इस इज्तिमा को कामयाब फ़रमाए। आमीन।